

धनि साध शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोध को ।
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहैं नाहीं बोध को ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

परिग्रह चौबिस भेद, त्याग करैं मुनिराजजी ।

तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए ॥

उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह-चिन्ता दुख ही मानो ।
फाँस तनक-सी तन में सालै, चाह लँगोटी की दुख भालै ॥
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि-मुद्रा धरैं ।
धनि नगन पर तन-नगन ठाड़े, सुर-असुर पायनि परैं ॥
घर माहिं तिसना जो घटावे, रुचि नहीं संसार सौं ।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर-उपगार सौं ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शील-बाढ़ नौ राख, ब्रह्म-भाव अन्तर लखो ।

करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर-भव सदा ॥

उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ ।
सहैं बान-वरषा बहु सूरे, टिकै न नैन-बान लखि कूरे ॥
कूरे तिया के अशुचि तन में, काम-रोगी रति करैं ।
बहु मृतक सड़हिं मसान माहीं, काग ज्यों चोंचैं भरैं ॥
संसार में विष-बेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा ।
‘द्यानत’ धरम दश पैड़ि चढ़ि कै, शिव-महल में पग धरा ।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

दश लच्छन वन्दौ सदा, मनवांछित फलदाय ।

कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय ॥